शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ऋग्वैदिक सांस्कृतिक और सामाजिक तत्वों का विश्लेषण

अमित कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री
देव समाज कालेज फॉर वीमेन.
फिरोजपुर, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

इतिहास का समग्र काल खंड दो भागों में विभक्त है : प्रागैतिहास और इतिहास। जिस काल के सन्दर्भ में इतिहासकार के पास लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है वह है प्रागैतिहास। भारत का सुव्यवस्थित इतिहास प्रारंभ होता है 1500 ईसा पूर्व के पश्चात, क्योंकि ऋग्वेद से हमें अभूतपूर्व ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। ऋगवेद में निहित ऐतिहासिक तत्व भारतीय ऐतिहासिक व धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना की आधार शिला है। आज भी भारतीय धर्म और सामाजिक विशेषता ऋग्वैदिक काल से प्रचुर साम्य रखती है। ऋग्वेद काल के बाद का इतिहास मात्र उन आधारों का उदात्तीकरण एवं परिष्करण है, जिन्हें इतिहासकारों ने ऋग्वेद में अन्वेषित कर शाश्वत इतिहास की धारा के उद्गम के रूप में स्थापित किया है। ऋग्वैदिक इतिहास के अन्वेषण व शोध पर महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। अनेक इतिहासकारों ने अनन्य सावधानी से वस्तुनिष्ठ इतिहास के तथ्यों का अवगाहन कर हिन्दू या सनातन धर्म की छाया से इतर शुद्ध ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण किया है।

मुख्य शब्द : *ऋग्वेद, वैदिक संस्कृति, इंद्र, जींद अवेस्ता*

भूमिका

आज हम जिस भारतीय इतिहास से परिचित हैं, उसका बीजारोपण सिन्धु घाटी की सभ्यता के पहले ही हो चुका था। सिन्धु घाटी की सभ्यता विश्व की प्रथम नगरीय सभ्यता थी और मूल रूप से वाणिज्य आधारित, जिसका पतन वाणिज्य की संभावनाओं के शिथिल होते ही हो गया। 1750 ई. पू. तक सिन्धु घाटी की सभ्यता भूमिगत हो चुकी थी। 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. का काल खंड पूर्व वैदिक काल का है, जो मूलतः ग्रामीण सभ्यता थी। इसका मूल आधार कृषि व पशुपालन था और सैन्धव सभ्यता से बहुत अल्प साम्य था। वर्तमान भारत का इतिहास इसी पूर्व वैदिक काल का ही पल्लवीकरण है, जिसका मूल आधार है ऋग्वेद। उत्तर वैदिक काल इसी ऋग्वैदिक संस्कृति का ही प्रसार था।

साहित्य समीक्षा तथा शोध प्रविधि

वैदिक इतिहास पर शोध करने वाले इतिहासकारों में रामशरण शर्मा (एड्वेंट ऑफ आर्यन्स इन इंडिया), रोमिला थापर (फ्रॉम लिनियेज तो स्टेट), थामस आर ट्राट मैन (द आर्यन डिबेट), मोरिस विंटरनित्ज (ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर), राल्फ टी एच ग्रिफिथ (द हायम्स ऑफ ऋगवेद) आदि प्रमुख हैं। इन्होंने ऋग्वैदिक इतिहास की वस्तुनिष्ठता को बरकरार रखते हुए ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से भारतीय इतिहास का समृद्ध आधार रचा है।. प्रस्तुत शोधपत्र उन वस्तुनिष्ठ

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ऐतिहासिक तथ्यों के पुनर्प्रतिष्ठा का प्रयास है, जो भारतीय इतिहास लेखन के आधार हैं। यह तथ्य काव्यात्मक स्रोत से आते हैं। अतः इनमें स्पष्ट वस्तुनिष्ठ तथ्य स्थापित करना एक चुनौती है। अनेक ऋचाओं में परस्पर विपरीत स्वर भी उभरते हैं और एक सुनिश्चित निष्कर्ष की स्थापना का प्रयास धूमिल होता प्रतीत होता है। अतः इस शोध-पत्र में ऐसी स्थिति से बचने का प्रयास किया गया है और मात्र उन्ही ऋग्वैदिक तथ्यों को शामिल किया गया है, जो एक सुदृढ़ और स्पष्ट भारतीय इतिहास की आधारशिला रखते हैं। वैदिक तथ्य निःसंदेह धार्मिक रुझान रखते हैं। एक बड़ी चुनौती उन्हें किसी धर्म और विशिष्ट (सनातन) परम्परा के चश्मे के बिना देखने की भी रही है। शोधार्थी ने इन मुद्दों के प्रति सावधान रहते हुए अपनी बात कहने का प्रयास किया है।

ऋग्वेद में इतिहास के तत्व

भारत का इतिहास वेदों का ऋणी है। वेद श्रुति परम्परा द्वारा हस्तांतरित किये जाते रहे। अतः वर्तमान लिखित स्वरूप में यह दसवीं शताब्दी में प्रकट हुए। फलतः कोई भी वैदिक ग्रन्थ अपने मूल स्वरुप में उपलब्ध नहीं है. ऋग्वेद सबसे प्राचीन भारतीय ग्रन्थ है, जिसमें 10 मंडल और 1024 सूक्त संकलित हैं। ऋग्वेद के दस मंडलों का संकलन अनेक कालखंडों में अनेक ऋषियों द्वारा किया गया है।

ऋगवेद की रचना 1500-1000 ई.पू. के मध्य हुई है। यह समय ताम्बे और कांसे के औजारों का था और इस समय तक भारतीय इतिहास में लौह धातु का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। अतः ऋग्वेद में लौह धातु का वर्णन नहीं है और इसमें कांसे को 'अयस' कहा गया है। आभूषण के लिए सोना नदियों की रेत से प्राप्त किया जाता था। इसलिए समुद्र को हिरण्मय कहा गया है। हालाँकि कपास के उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य बलूचिस्तान के मेहरगढ़ में पूर्व वैदिक काल के काफी पहले ही प्राप्त हुआ है, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से ऋग्वेद में कपास का वर्णन नहीं है। कपास के प्रयोग के समकालीन पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध हैं। सिरीस नामक धागे की कताई का जिक्र है, परन्तु सूती कपड़े का कहीं भी उल्लेख नहीं है। सिरीस को इतिहासकारों ने कपास की श्रेणी से बाहर रखा है। मेहरगढ़ में गेहूं व जौ की किस्मों का उत्पादन पूर्व वैदिक काल के काफी पहले प्रारम्भ हुआ था, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से ऋग्वेद में गेहूं का उल्लेख नहीं है। गोधूम शब्द आता है, लेकिन यह साफ तौर पर गेहूं को इंगित नहीं करता। परिवहन के क्षेत्र में तीली वाले पहियों का जिक्र ऋग्वेद में है और इसी कालखंड में तुर्कमेनिस्तान में तीली वाले पहिया गाडी के खिलौने भी प्राप्त हुए हैं। तकनीकि विकास का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 100 चप्पुओं वाले जहाज का उल्लेख है। यह कहीं न कहीं विदेश व्यापार को भी इंगित करता है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह व्यापार किस सीमा तक था और किन देशों से था। व्यापार की स्वाभाविक परिणिति है नगर, बाजार, मुद्रा और व्यापारी वर्ग की उपस्थिति, परन्तु ये सारे ऋग्वेद में नदारद हैं। एक भी नगर का उल्लेख ऋग्वेद में नहीं है। 'पुर' का उल्लेख किलेबंद बस्ती के रूप में है, परन्तु इससे किसी नगर का बोध नहीं होता। उत्तर भारत में नगरों का उद्भव 700 ई.पू के काफी बाद होता है।

समाज और राजनीति

राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था के प्रमाण हैं। गणतांत्रिक शासन पद्धति का प्रचलन अभी नहीं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शुरू हुआ था। ऋग्वैदिक राजनैतिक व्यवस्था में एक अद्भुत तत्व यह दिखता है कि कबीलाई शासन व्यवस्था में एक कबीले में एक से अधिक शासक होते थे, जिन्हें 'राजन' कहा जाता था। राजन का पद वंशानुगत था।

पारिवारिक परम्परा और पितृसत्तात्मक समाज का स्पष्ट अंकन ऋग्वेद में हैं। वर्तमान पारिवारिक संरचना ऋग्वैदिक काल में आकार ले चुकी थी। एक ही कुटुंब में एक से अधिक पेशे व वर्ण के लोगों का उल्लेख मिलता है। अचरज यह है कि पूजा और यज्ञ के लिए कतिपय ऐसे श्लोक भी हैं, जिनमें शत्रुता के लिए देवताओं से सहयोग माँगा गया है। कुछ श्लोकों में 'बलि' के लिए भगवान् से प्रार्थना की गयी है। बलि 'कर' की बजाय जनता द्वारा राजा को प्रदत्त भेंट था, लेकिन यह भेंट देने के लिए वह विवश भी किया जाता था। युद्ध को 'गविष्टि' की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि युद्ध का सर्वमान्य समकालिक अर्थ था गाय को प्राप्त करने के लिए संघर्ष।

ऋगवेद में स्त्री विमर्श

स्त्रियों को दक्षिणा में देने का भी उल्लेख ऋगवेद में है। एक श्लोक में कहा गया है कि 'राजा त्रासदस्यु ने एक ऋषि को दक्षिणा में 50 स्त्रियाँ दीं'। इस उदाहरण से स्पष्ट संकेत मिलता है कि स्त्रियों की समाज में स्थिति दोयम दर्जे की थी। यहाँ तक कि उनके साथ वस्तुओं की भांति व्यवहार किया जाता था। दास या दासी शब्द का ऋग्वेद में उल्लेख तो नहीं है, लेकिन यह उद्धरण प्रकारांतर से दासी जैसी स्थिति के सन्दर्भ में बताता है। एक तरफ स्त्रियों की हम इस काल में ऐसी स्थिति भी पाते हैं, जब लोपामुद्रा, घोषा और सिक्ता जैसी विदुषी स्त्रियाँ ऋगवेद की ऋचाओं की रचना करती हैं, लेकिन स्त्रियों की स्थिति सदा की भांति अधिकारविहीन और पुरुष आधिपत्य के अंतर्गत ही अर्थ पाने को चेष्टारत थी। परिवार में पुत्र ही वांछित थे, पैतृक संपत्ति पर पुरुष का अधिकार था। ऋग्वैदिक काल में पुत्रियों को संपत्ति में हिस्सा नहीं दिया जाता था। पर्दा प्रथा और बाल विवाह का कोई संकेत नहीं है। विवाह की आधुनिक प्रणाली की आधारशिला इस काल में रखी जा चुकी थी। विधवाओं के लिए समाज में स्वीकार्यता कम थी और उनका जीवन जटिल था। अनेक प्रकार के प्रतिबंधों से बचने के लिए विधवाओं के अपने देवर से विवाह करने के अनेक उल्लेख ऋगवेद में पाए गये हैं।

वर्ण, रंगभेद और धर्म

कतिपय स्थानों पर रंगभेद स्पष्ट मुखर हुआ है और काले रंग के स्थान पर गौर वर्ण को पर्याप्त प्रतिष्ठा प्रदान की गयी है। प्रायः दस्यु और दास वर्ग को काले रंग का दर्शाया गया है। पुरुष सूक्त में वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज का वर्णन है, लेकिन यहाँ 'वर्ण' शब्द का उल्लेख नहीं किया गया है. वर्णों की उत्पत्ति एक परम पुरुष के अंगों से मानी गयी है। वैश्य शब्द की जगह विश शब्द आता है वह भी साधारण जनता को इंगित करते हुए।

ऋग्वेद में मूर्ति पूजा का कोई उल्लेख नहीं है। पशुओं के साथ गाय की बलि दिए जाने के प्रमाण हैं। सोम नामक मदिरा को देवता कहा गया है। इंद्र (राजा) के पश्चात सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता 'अग्नि' है। सरस्वती को अभी ज्ञान की देवी नहीं घोषित किया गया था, हालाँकि वह नदी की देवी अवश्य हैं। ऋगवेद में आत्मा के पुनर्जन्म का कोई उल्लेख नहीं है। अंत्येष्टि में दाह संस्कार तथा दफनाने दोनों की स्वीकृति है। समय का बोध है और वर्ष, माह आदि की गणना के लिए कैलेण्डर का भी उल्लेख

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है। पृथ्वी को पहिए की तरह गोल बताया गया है।

दिव्यता के साथ हर आयाम में संपर्क स्थापित करने की अनुष्ठानिक चेष्टा की गयी है। जीवन के निम्नतम आवश्यकताओं से लेकर उच्चतम अभिलाषाएं बिना देव सहयोग आकांक्षा व स्तुति के पूर्ण होती प्रतीत नहीं होतीं। धर्म के रहस्यवादी स्वरूप का भी ऋग्वेद में दर्शन होता है - 'आरम्भ में सत, असत, वायु, आकाश, आवरण, संरक्षण कुछ भी नहीं था। न मृत्यु थी और न ही अमरत्व!' जुए के खेल के तमाम गुण-दोषों का निरूपण कर समाज को दिशा दिखाने का प्रयास किया गया है। एक प्रसंग में जुए को पत्नी से अलग करने का कारण बताया गया है।

निष्कर्ष

आज का दौर अनेक शताब्दियों के अनुभव को समाहित किए हुए है, लेकिन हम देख सकते हैं कि आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता के मध्य दौर में मौलिक इतिहास का जो आधार ऋग्वेद ने उपलब्ध कराया था, वह अभी तक अछूता है। हमारे जीवन की शैली, रहन-सहन, रीति-रिवाज, मान्यताएं, परम्पराएं और कर्मकांड का आधार आज भी कमोबेश वही है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है। इसका कारण यह है कि संभव है कि इसमें वह सनातन सत्य का अंश हो जो हमें इससे विमुख होने की अनुमति नहीं प्रदान करता। नयी पीढी के मानस पटल पर यह अंकित रहना आवश्यक है कि आज हम जो हैं, अंदरूनी रूप से 4500 वर्ष पूर्व उससे कुछ बहुत भिन्न नहीं थे। हमारी विरासत ही हमारी वसीयत बनती रही है। स्वरूप परिवर्तित हुआ है, मूल्य यथावत हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अलबरूनी, किताब उल हिन्द
2. ऋगवेद, मंडल 10,75.8
3. वही, मंडल 10,61.9
4. हबीब, इरफान, ठाकुर, विजय कुमार, (2016), वैदिक काल : भारत का लोक इतिहास-3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , पृष्ठ 18.
5. ऋगवेद, मंडल 1,116,4-5
6. वही , मंडल 10-85
7. वही, मंडल 10,40.2
8. वही, मंडल 10,173.6
9. वही, मंडल 9,76.2
10. वही, मंडल 8, 19.36
11. वही, मंडल 1, 124.7
12. वही, मंडल 10, 40.2
13. वही, मंडल, 1, 100.18
14. वही, मंडल, 10 सूक्त 90
15. वही, मंडल, 10, 15.14
16. वही, 10, 89,14
17. वही, मंडल 10,129.
18. वही, मंडल 10,34